पाठ्यक्रम

संगीत (सितार) पेपर 1

यूनिट-I: संगीत शब्दावली -

1. नाद, वर्ण, अलंकार, ग्राम, मूर्छना, स्थय, रागलाप, रूपकलाप, आलाप्ति, स्वस्थ-नियम, गीति, मेल/थाट, वादी-संवादि-अनुवादी-विवादी, आविर्भाव- तिरोभाव, अल्पत्व-बहुतत्व, कण, मींड, आंदोलन, खटका, मुर्की, जमजमा, क्रिंटन, सूत, घसीट, अलाप, कटार और ठोक झाला, तान-तोड़ा और गमक के प्रकार।
2. नाट्यशास्त्र में प्रयुक्त तार वाद्ययंत्रों के तकनीकी शब्दों का अध्ययन - आतोद्य, कुतप, धातु के प्रकार - विस्तार, करण, अविद्ध, व्यंजन। तत्त्व- अनुगत- ऊघ, निर्गित या बहिर्गीत।
3. ताल, लय, मात्रा, ठेका, सैम, खाली, भारी, आवर्तन, तिहाई, उठान, मुखड़ा, मोहरा, पेशकार, कायदा, रेला, परन, लंबी, लड़ी, तिहाई, चक्रदार- तिहाई। लयकारों का अभ्यास- डुगुन, तिगुन, चौगुन, आद, कुआड़, बियाड।

यूनिट-II: गत के प्रकार, घराना और सितार की विशिष्ट तकनीक

1. गायकी अंग पर आधारित गत-मसीतखानी, रजाखानी, फिरोजखानी, अमीरखानी, जाफरखानी, सितारखानी, मिसराबानी और गत।
2. सितार का घराना- सेनिया, इटावा, जयपुर, दरभंगा, लखनऊ, मैहर, इंदौर, मिश्रबानी।
3. सितार का ऐतिहासिक विकास एवं विकास। सितार वादकों द्वारा सितार में प्रयुक्त स्ट्रिंग्स और फ्रेट की संख्या। तकनीकी प्रसंस्करण के दौरान शास्त्रीय सितार का संरचनात्मक विश्लेषण। सुरबहार, इसराज, दिलरुबा और सितार का संरचनात्मक, तकनीकी और तुलनात्मक अध्ययन।
4. वीणा पर प्रहार के प्रकार (दाएँ हाथ, बाएँ हाथ और दोनों हाथ से व्यपार), संगीत रत्नाकर के अनुसार वीणा वादन के दस प्रकार। जोड़-अलप के 12 भाग: विलाम्बित, मध्य, द्रुत, झाला, थोक, लड़ी, लड़गुथव, लाडलापेट, परन, साथ, धुआं, माथा। सितार की सेनिया तकनीक के 12 अंग- अलाप, जोड़आलाप, झाला, ठोंक झाला, गत, तोड़ा, लड़ी, गुठव, लड़गुठाव, कतर, लाडलापेट, तार परन।

यूनिट- III: विभिन्न पहलुओं में उपकरणों का अध्ययन

1. वाद्ययंत्रों का वर्गीकरण एवं महत्व। सितार, सारंगी, वायलिन, इसराज/दिलरुबा, सरोद, संतूर, बांसुरी, तबला और पखावज तथा विभिन्न प्रकार की वीणा का ऐतिहासिक विकास।
2. वैदिक काल के वाद्ययंत्रों की सामान्य जानकारी। राजस्थान के लोक वाद्ययंत्र। कर्नाटक संगीत के प्रमुख वाद्ययंत्र।
3. संगीत-रत्नाकर के अनुसार वादक के गुण-दोष, वाग्गेयकार लक्षण।
4. ऑर्केस्ट्रा 'वृंदा-वादन' में तकनीक, प्रस्तुति और नए रुझान। वाद्ययंत्रों के प्रतीकात्मक और सौंदर्यपरक उपयोग।

यूनिट- IV: विभिन्न परिप्रेक्ष्य में संगीत का ऐतिहासिक अध्ययन

1. प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल में भारतीय संगीत की उत्पत्ति और विकास।
2. राग, राग-जाति, राग-लक्षण। राग का वर्गीकरण। राग का समय-सिद्धांत। राग और रस सिद्धांत। 'कटापयादि' प्रणाली का ज्ञान।
3. भारतीय और पश्चिमी संकेतन प्रणाली का विकास और विकास। 4. संगीत रत्नाकर के छठे अध्याय 'वाध्याय' का सामान्य अध्ययन।

यूनिट- V: ध्वनि, स्केल और पश्चिमी संगीत

1. ध्वनि का प्राथमिक सिद्धांत, इसका उत्पादन और प्रसार। मानव कान की शारीरिक रचना और शरीर क्रिया विज्ञान। हार्मोनिक्स (स्वयंभू स्वर) का अध्ययन, विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों की आवृत्ति।
2. व्यंजन का अध्ययन - असंगति, संगीत अंतराल, सामंजस्य, माधुर्य, समरूपता, बहुध्वनि, सिम्फनी, राग, काउंटर पॉइंट, प्रामाणिक और प्लेगल मोड।
3. स्केल के प्रकार- डायटोनिक, क्रोमेटिक, समान रूप से टेम्पर्ड। विभिन्न स्केल में स्वर की आवृत्तियाँ। हिंदुस्तानी, कर्नाटक और पश्चिमी स्केल का तुलनात्मक अध्ययन। सेंट और सेवर्ट के अनुसार स्केल का विभाजन।